

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री सुभाष चंद्र सिंह (ओडिशा) : महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

Demand to honour child martyrs who laid down their lives during freedom struggle

श्री राकेश सिन्हा (नाम निर्देशित) : महोदय, देश स्वतन्त्रता की 75वीं सालगिरह मनाने जा रहा है। भारतीय साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलन का वैशिष्ट्य, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद था। इसके कारण राष्ट्रवाद के भाव का संचार समाज के सभी तबकों एवं आयु वर्गों के बीच सहजता के साथ हुआ। आन्दोलन की बुनियाद भारत माता के गौरव को पुनर्स्थापित करना था। इसी सांस्कृतिक चेतना ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को दुनिया के दूसरे साम्राज्यवादी आन्दोलनों से अलग और विशिष्ट रूप प्रदान किया है। इसी खासियत का हिस्सा अल्प आयु के बच्चों की साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में अग्रणी भूमिका थी। गौरतलब यह है कि उनमें परिपक्वता और राष्ट्रीयता की समझ असाधारण थी। पटना सचिवालय पर तिरंगा फहराने के संकल्प में 11 अगस्त, 1942 को जिन सात सेनानियों ने शहादत दी, उनमें से चार उमाकान्त सिन्हा, रामानन्द सिंह, रामगोविन्द और देवीपद नवीं कक्षा के छात्र थे, दो राजेन्द्र और सतीश झा, 10वीं कक्षा के छात्र थे और ओडिशा की बाजी राउत ने मात्र 12 वर्ष की आयु में शहादत दी थी। इसी आयु में असम में तेलेश्वरी बरुआ ने शहादत प्राप्त की। महाराष्ट्र के शिशिर कुमार मेहता की आयु 15 वर्ष थी, जब वे शहीद हुए थे। असम की कनकलता बरुआ ने 17 वर्ष में और खुदीराम बोस ने 18 वर्ष की आयु में राष्ट्र के लिए प्राणोत्सर्ग किया। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। ये सभी हमारे प्रेरणा और राष्ट्रवादी ऊर्जा के स्रोत हैं।

महोदय, मेरी सरकार से मांग है कि 75वीं सालगिरह पर बाल स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्बन्ध में Oral History के तहत जानकारीयाँ एकत्रित कर उनके लिए एक राष्ट्रीय संग्रहालय बनाया जाना चाहिए। प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार और नेशनल बुक ट्रस्ट - तीनों के परस्पर समन्वय के साथ इन बाल शहीदों पर monograph का प्रकाशन करना चाहिए। यह उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Good; good. एसोसिएट करने के नाम लिए लिख कर भेज दें। यह इम्पोर्टेंट सब्जेक्ट है।

DR. FAUZIA KHAN (Maharashtra): Sir, I would like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRI SUJEET KUMAR (Odisha): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRIMATI JAYA BACHCHAN (Uttar Pradesh): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

श्री राम नाथ ठाकुर (बिहार) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री सुशील कुमार मोदी (बिहार) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

DR. SONAL MANSINGH (Nominated): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRI PRASANNA ACHARYA (Odisha): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

श्री जुगलसिंह माथुरजी लोखंडवाला (गुजरात) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री हरनाथ सिंह यादव (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री बृजलाल (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्रीमती गीता उर्फ चंद्रप्रभा (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करती हूँ।

SHRI SUBHASH CHANDRA SINGH (Odisha): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

DR. SASMIT PATRA (Odisha): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I would also like to associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री शिव प्रताप शुक्ल (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी (महाराष्ट्र) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करती हूँ।

श्री अखिलेश प्रसाद सिंह (बिहार) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्रीमती फूलो देवी नेतम (छत्तीसगढ़) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करती हूँ।

श्री राजमणि पटेल (मध्य प्रदेश) : सर, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विशेष उल्लेख से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

MR. CHAIRMAN: Prof. Manoj Kumar Jha.

Demand for instituting 'Bhagat Singh Chair' in Central universities

PROF. MANOJ KUMAR JHA (Bihar): Hon. Chairman, Sir, I must express my gratitude for allowing me to raise this demand which is 'Demand for instituting in Central Universities Bhagat Singh Chair for the study of Indian democratic cultures and values. '

Sir, Shaheed Bhagat Singh is venerated in all political streams of thought in India. The astounding spirit of martyrdom of this young revolutionary during the anti-colonial movement resides in the heart of every free Indian today. Yet, unfortunately, Bhagat Singh's ideas, espousing the cause of universal brotherhood, are little understood. Bhagat Singh was a keen observer and a sharp commentator on the most burning questions that confronted India. In his brief life, he wrote extensively how independent India could transform itself into a truly egalitarian society. He scrutinized Indian society and national leadership with utmost candidness and with deep empathy.